प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध का विषय "गांधी दर्शन के मूल तत्वों की मीमांसात्मक विवेचना" है। यह दर्शन शास्त्र के विषय वस्तु से सम्बंधित है। दर्शनशास्त्र के अंतर्गत ही गांधी दर्शन को समाहित किया गया है । महात्मा गांधी का चिंतन क्षेत्र बहुत ही व्यापक और बहुआयामी है। गांधी जी मात्र विचारक, नेता तथा समाज-सुधारक ही नहीं थे, अपितु राजनीतिक चिंतन एवं दर्शन को नया मोड़ देने वाले सक्रिय राजनीत्ति, संत एवं विचारशील, दार्शनिक, चिंतक भी थे। वे भारतीयता सांचे में ढले सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य के साथ-साथ विश्व-शांति, प्रेम की प्रतिमूर्ति तथा संत होने के साथ ही साथ एक बहुत बड़े रणनीतिकार तथा दार्शनिक भी थे। गांधी जी के चिंतन एवं कर्म का यद्यपि एक सन्दर्भ विशेषरहा है, लेकिन वे केवल भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन एवं आधुनिक भारत की परिधि में ही सीमित नहीं किये जा सकते हैं। वे चिरंतन मानवीय समस्याओं से जुड़े होने के कारण शाश्वत मूल्यों के उपासक रहे हैं। समस्याएँ चाहे पश्चिमी देशों की हो अथवा तृतीय विश्व के नवोदित राष्ट्रों की हो, उनके समाधान में कहीं न कहीं प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष गांधी जी की संबंद्धता झलकने लगती है। एक नवीन मानव और नूतन समाज की संरचना की अवधारणा के सन्दर्भ में गांधी दर्शनका परायण एवं अनुशीलन आवश्यक है।

अतः गांधी दर्शन के बारे में भी यही कहा जा सकता है कि गांधी दर्शन आधुनिक युग में मानवीय सुधार का दर्शन है, जिसके द्वारा समाज में व्याप्त अंधविश्वास और कुरीतियों को सत्यता के माध्यम से निजात दिलाने की प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

इस विषय के प्रति मेरी रूचि इसलिए भी है कि गांधी जी एक राजनीतिज्ञ, चिंतनशील, समाज सुधारक, दार्शनिक के अलावा एक आध्यात्मिक पुरुष भी थे और मेरा लगाव भी आध्यात्म से है। इसीलिए गांधी दर्शन के प्रतिमेरा गहरा लगाव रहा है।

विषय को विस्तार देने का महत्वपूर्ण कार्य विभाग के प्राध्यापक एवं मेरे शोध निर्देशक डॉ. डी. एन. प्रसाद सर ने किया है। इन्होनें मेरे शोध कार्य को बड़े ही सुगम्य और सरल स्वभाव के साथ पूर्ण कराया और गांधी दर्शन के प्रति मेरी प्रतिबद्धता को और मजबूत किया।

मेरे शोध का विषय "गांधी दर्शन के मूलतत्वोंकी मीमांसात्मक विवेचना" है। इसको "चार अध्यायों" में विभाजित किया गया है। ये अध्याय गांधी दर्शन की तात्विक विचार मीमांसा पर ही आधारित हैं जो इस प्रकार हैं –

प्रथम अध्याय :- गांधी दर्शन में प्रथम तत्व : मनुष्य

द्वितीय अध्याय :- गांधी दर्शन में द्वितीय तत्व : जगत

तृतीय अध्याय :- गांधी दर्शन में तृतीय तत्व: ईश्वर

चतुर्थ अध्याय :- गांधी दर्शन में चतुर्थ तत्व: सत्य

गांधी दर्शन में मूल तात्विक मीमांसा इन्ही सन्दर्भों में निहितहै। इन अध्यायों के माध्यम से यह जानने की कोशिश की गई है कि मनुष्य इस जगत से किस तरह संबंधित हैऔर जगत ईश्वर से तथा ईश्वर सत्य से संबंधित है। कहने का तात्पर्य यह है कि गांधी दर्शन का मूल तत्व मनुष्य, जगत, ईश्वर और सत्य है। ये चारों मूल तत्व एक-दूसरे पर आधारित होकर किस तरह तात्विक जगत में मनुष्य के लिए साधन का कार्य करते हैं तथा समाज में आध्यात्मिकता और भौतिकता का समन्वय किस प्रकार होता है ? यह शोध का प्रमुख उद्देश्य है।

विषय को विवेक में उतारने के लिए शोधार्थी द्वारा दार्शनिक साहित्यों का अध्ययन किया गया है। इसके सन्दर्भ में गांधी दर्शन से संबंधित तथा सामाजिक और राजनीतिक दर्शन से सम्बंधित अध्ययनभी शोधार्थी द्वारा किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य आध्यात्मिक और भौतिक अर्थात तात्विक ज्ञान को नवीनता के साथ समाज में लाने का प्रयास करना है। इस अध्ययन के माध्यम से मनुष्य को नैतिकता के मार्ग पर लाने के लिए मूल तात्विक विचार मीमांसा को पूर्ण कर एक नवीन समाज, राष्ट्र और नवीन जगत के निर्माण हेतु आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दृष्टि का समन्वय करना है। शोध कार्य में गांधी जी के कालजयी विचार मीमांसा, सामाजिक विचार मीमांसा और आर्थिक समन्वय, सहयोग, समभाव, सत्य, अहिंसा, सर्वोदय और व्यक्ति के आत्म-सम्मान को समाहित किया गया है, क्योंकि गांधी जी क्रियाशील और व्यावहारिक दार्शनिक थे। इसलिए गांधी दर्शन के अंतर्गत मूल तत्वों के मीमांसात्मक दर्शन के रूप में समाज के प्रति दार्शनिक अवयवों को प्रस्तुत करने का प्रयास इस शोध विषय उत्स है।